सच्ची बात

TRUE FACTS

भाग-1

कृतिकार-
प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

सच्ची बात
TRUE FACTS

कृतिकार-

प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

सच्ची बात
TRUE FACTS
भाग-1

वात्सल्य मिलन विशेषांक

आशीर्वाद

प.पू. गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

कृतिकार

प.पू. सिद्धान्तज्ञ उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

प्रेरणा

श्रमणी आर्यिका 105 विमलश्री माताजी

संकलन व अंग्रेजी अनुवाद

बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी

संस्करण

प्रथम संस्करण–2020, 1100 प्रतियाँ

पावन प्रसंग

11वें आचार्य पदारोहण दिवस के अवसर पर

प्राप्ति स्थान

समता तीर्थ धाम, सीपुर मो. 9828613614

देवेन्द्र जैन, बीना (म.प्र.) मो. 7580223344

निर्ग्रन्थ श्रमण सेवा समिति, भिण्ड मो. 9425127061

प्रकाशन

वीतराग श्रमण श्रुत संवर्धन ट्रस्ट, भिण्ड

मो. 9826801542

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर

मो. 8290526049, 8619727900 jyotigraphics84@gmail.com

विनम्र देशना चैनल

You Tube

Subscribe

Shankar Bhaiya
Vinamra Deshna Parivar
M.: 7999877637, 9414426947

जिनवाणी

जीवन है पानी की बूँद के 5500 छंद के रचयिता
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

शुभाशीष वचन

मोक्षमार्ग को प्रदर्शित करने वाले भव्याम्बुजों को अपनी दिव्यवाणी से विकसित करने वाले मात्र तीर्थंकर देव हैं। अर्थात् प्राणीमात्र के कल्याण की भावना द्वारा जिन्होने सर्वोत्कृष्ट परमात्म पद को प्राप्त किया है। वे ही मुख्य रूप से प्रवचन के अधिकारी हुआ करते हैं। पश्चात् गणधरदेव प्रवचन के उत्तराधिकारी हुआ करते हैं। सम्प्रति वर्तमान में पुण्याभाव व काल के प्रभाव से साक्षात् तीर्थंकर देव की दिव्यध्वनि पियूषवाणी श्रवण करने का सौभाग्य नहीं और गणधरदेव का भी सान्निध्य न होने से उनकी वाणी का रसपान भी नहीं कर पा रहे हैं। इन दोनों के अभाव में जिनवाणी को प्रसारित करने का उत्तराधिकारी आचार्य परमेष्ठी को बनाया गया। जिन्होंने परम्परा से प्रसारित जिनेन्द्र प्रभु की वाणी को स्वशक्ति व क्षयोपशम के द्वारा प्रवाहित किया उन्हीं पूर्वाचार्यों की परम्परा को प्रवाह प्रदान करने का कार्य गुरु आज्ञा व आशीष से हमें करना पड़ता है।

कहते हैं महान बनने के लिए किसी को हटाने की, मिटाने की, वश करने की आवश्यकता नहीं, बल्कि अपने को बढाने की आवश्यकता है। इसके लिए सम्यक्त्व धारणा करना सर्वप्रथम परम आवश्यक है। सम्यक्त्वपूर्वक ज्ञान ही कार्यकारी होता है। धर्म का एक अंश एक **सच्ची बात** भी जीवन का काया-कल्प करने में समर्थ है। जिस प्रकार सूर्य की एक किरण विश्व में व्याप्त अंधकार को नष्ट करने में समर्थ है, अग्नि की एक चिंगारी घास के ढेर को भस्म करने में समर्थ है, और अमृत की एक बूँद समस्त व्याधियों का उपशमन करने में समर्थ है और कल्पवृक्ष छोटा हो या बड़ा, मन की मुराद तो पूरी करेगा ही। उसी प्रकार प्रवचन पाँच पृष्ठों पर लिखा हो या सार एक पृष्ठ पर लेकिन यदि उसमें सत्यता का तेज है तो वह जीवन में धन्यता लाएगा ही।

श्रुतज्ञान की परम्परा को भविष्य के लिए वृद्धिंगत करने में मनीषियों, महापुरुषों, आचार्यों तथा अन्यों के बेजोड़ योगदान से हर प्रकार के ज्ञान के द्वारा सत्साहित्य का प्रतिपादन होता रहा है। गुरु कृपा से माँ जिनवाणी को जन-सामान्य के बीच प्रसारित करने का कार्यभार मुझे सौंपा गया। सभाओं को सम्बोधित करते समय वीर प्रभु के मुख कमल से नि:सृत शब्द वर्गणाओं, गौतमादि गणधर देवों के द्वारा प्रदत्त वाणी व पूर्वाचार्यों के द्वारा लिपि बद्धित शास्त्रों के वाचन के समय चिंतन की गहराइयों में जाकर सम्बोधन के समय जो वाक्य कहे उन वाक्यों को बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी ने संकलन किया। हम तो प्रवचन करके आ जाते हैं और ये लोग लिख लेते हैं। दीदी ने उन प्रिय वचनों में से सारभूत बातें, **सच्ची बातें** जो जीवन को सत्यार्थ रूप देने वाले वचनों के बाग से निकले कुछ पुष्प संजोकर उन्हें अंग्रेजी भाषा में अनुवादित कर उन पुष्पों का गुलदश्ता बनाकर आप सभी के समक्ष **"सच्ची बात– True Facts"** के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। जिससे उन सत्यार्थ बोधक पुष्पों की सुवास आप तक पहुँचे और आपका जीवन सुवासित हो सके। आचार्य भगवन् कहते हैं **सम्यक्त्वाद् दुर्गतेनाश:** सम्यग्दर्शन से दुर्गति का नाश होता है, निर्दोश ज्ञान से कीर्ति प्राप्त होती है, चारित्र से लोक में पूज्यता मिलती है और मोक्ष इन तीनों की सफलता से प्राप्त होता है। अत: दीदी के लिए हमारा खूब-खूब आशीर्वाद है। वह अपनी साधना, ज्ञान, अध्ययन को आगे बढ़ायें। कल्याणकारी जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर अपनी इस स्त्री पर्याय का छेदन कर अपने मूल लक्ष्य को प्राप्त करें। दीदी का यह प्रयास जन-जन के लिए लाभकारी हो और सदैव वीतराग शासन जयवंत हो।

शुभाशीष
आचार्य विनम्रसागर

अथ उपोद्घात

दिगम्बर जैन परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र, श्रमण सूर्य, बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य सूरिगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने लुप्त हो चुकी यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण की अलख को पुन: प्रज्जवलित किया। इस युग में प्रथम यति सम्मेलन सन् 2012 को जयपुर में आयोजित हुआ। अत्यन्त महती प्रभावना के साथ यह यति सम्मेलन सम्पन्न हुआ। तदोपरांत गुरु आशीष से द्वितीय यति सम्मेलन, युग प्रतिक्रमण कराने का सौभाग्य हमारी झाँसी समाज को प्राप्त हुआ। समाज में हर्ष की लहर दौड़ उठी और इस युग प्रतिक्रमण की अध्यक्षता करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। समय कम और कार्य अधिक होने के कारण मुझे एक कुशल नेतृत्व और वात्सल्यमयी हाथों की कमी महसूस होने लगी । फिर हमने गणाचार्य गुरुदेव से अनुनय, विनय की हमें एक जादूगर की आवश्यकता है जो सिर पर हाथ फेरे तो हमारा मनोबल बढ़ सके। तभी गुरुदेव ने हमें कहा धर्मनगरी इटावा में प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज हैं, आप उनसे आग्रह करें। हम सभी श्रीमान् प्रवीण जैन, रिषभ जैन समस्त समिति के साथ इटावा पहुँचे और गुरुदेव से कहा गुरु आज्ञा है, आपको सभी कार्य छोड़ झाँसी के लिए विहार करना होगा। गुरुदेव ने गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर हमें वात्सल्यमयी निगाहों से देखा और एक ही मुस्कुराहट से हमें स्वीकृति दे अपना बना लिया। गुरुदेव ने झाँसी पहुँचकर अविस्मरणीय, महामृत्युञ्जयी भक्तामर शिविर लगा करके हम सभी को भक्ति की गंगा में डुबो दिया। शिविर का ऐसा चमत्कार देखा कि शिविरोपरान्त सड़क पर कम से कम एक घंटे पूरा ट्रैफिक जाम हो जाया करता था। उस शिविर में बालक, युवा, वृद्ध सभी इतनी संख्या में आते थे कि मंदिर ऊपर से नीचे सीढियों तक भर जाता था। जैसे समवशरण में मुख्य श्रोता होता है उसी प्रकार गुरुदेव के समवशरण में अग्रिम पंक्ति में बैठ मुख्य श्रोता बनने का चाव मुझे लग गया। शिविर से अनुपम प्रभावना हुई और 25 समवशरण विधान की भूमिका गुरु आशीष से बनी। अब हमें लग गया कि हमारे सिर पर आदि प्रभु, गणाचार्य गुरुदेव और वर्तमान के मानतुंग का हाथ आ गया। एक दिन गुरुदेव से चर्चा के समय गुरुदेव ने कहा–

''अज्ञ सुखमाराध्य: सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ:।
ज्ञानलवदुर्विदग्ध: ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति।।

हिताहित ज्ञानशून्य ना समझ को समझाना बहुत आसान है, उचित और अनुचित को जानने वाले ज्ञानवान् को राजी करना और भी आसान है, किन्तु थोड़े से ज्ञान से अपने को पंडित समझने वाले को तो स्वयं विधाता भी संतुष्ट नहीं कर सकते।

गुरुदेव सदैव ऐसी बातें कहते थे जो जीवन में नवीन चेतना का संचार करती थीं। उन्हीं दिनों कि बात है कि आगरा शहर की दो सहोदरा (सगी बहिनें) गुरुदेव के श्रीचरणों में आत्म कल्याण की भावना हेतु पधारीं। उनके अभिभावकों ने उन्हें पकड़कर खींचा, बहुत प्रयास कर लिए उन्हें ले जाने के पर वो दृढ़ रहीं। यह बात सहज ही है कि छोटी–छोटी वय में बच्चों के गृह त्यागने पर माता–पिता को दु:ख तो होता ही है। हमसे भी उनका रुदन व दु:ख देखा न गया। हमने गुरुदेव से कहा इतनी छोटी वय में गृह त्याग करना ठीक है क्या ? तब गुरुदेव मुस्कुराये और बोले **''मैं तो कह ही रहा हूँ तुम जाओ''** अब तुम लोग भी परीक्षा कर लो। हमने उनके पिताजी को आश्वासन दिया कि हम इन्हें समझाकर भेजते हैं। फिर हम उन बहिनों के समक्ष पहुँचे और उनसे प्रश्न करने लगे। तब एक–एक करके उन्होंने हमें ऐसे उत्तर दिए कि हम सभी स्तब्ध रह गये। हम अचम्भित रह गये कि यह मात्र 15 वर्ष की अल्पायु की धारक हैं, उनकी दृढ़ता, तर्क शक्ति, आत्महित की प्रबल भावना और गुरु भक्ति ने हमें सोचने पर मजबूर कर दिया कि समर्पण ही सर्व शक्तियों का प्रदाता है। यहाँ हम बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी की बात कर रहे थे। हम दीदी के बहुत आभारी हैं, उन्होंने पूज्य गुरु के मुख से नि:सृत आगम के गूढ़ रहस्यों को, स्याद्वाद, न्याय, नय अनेकांत के सार रूपी कमल पुष्पों को हम सभी के बीच बिखेरा। गुरुदेव आज के युवा के अनुसार आगम को इतने सरल उद्धरणों के माध्यम से समझाते हैं कि मन आनन्दित हो उठता है। उन्हीं गूढ़ रहस्यमयी वयनरूपी सरोवर में से साररूपी कमल इस अनूठी पुस्तक **''सच्ची बात'' "True Facts"** के माध्यम से हम सभी के सुसुप्त पड़े हृदय कमल को पुन: खिलाने का कार्य करेंगे। दीदी ने आंग्ल भाषा में अनुवाद कर वर्तमान युग के युवाओं में भी उस खुशबू को बिखेरने का प्रयास किया है। जो व्यवहार के साथ–साथ निश्चय का ज्ञान कराने में भी कल्याणकारी सिद्ध होगी। पुन: वात्सल्य वारिधी परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री 108 विनम्रसागर जी महामुनिराज के पावन श्री चरण कमल में त्रय भक्तिपूर्वक बारम्बार नमोऽस्तु कर गुरुदेव का परम आशीष चाहूँगा।

–प्रदीप जैन (आदित्य)
पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार

एक नजर कृतिकार पर

जो अट्ठाइस मूलगुणों का पालन करते हुए आत्म साधना में लीन रहते हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पंचेन्द्रिय विजय, छह आवश्यक अस्नान, अदन्त धावन, कैश लौंच करना, पृथ्वी पर सोना, कर पात्र में आहार, खड़े होकर आहार लेना, दिन में एक ही बार आहार जलादि ग्रहण करना। इस प्रकार ये सात शेष मूलगुण होते हैं। जिनका यतीश्वर पालन करते हैं। सभी जीवों में मैत्री भाव रखते हैं। इस प्रकार साधुओं का जीवन उनकी चर्या विलक्षण व महान होती है। संसार में इससे बढ़कर त्याग व आचरण अन्यत्र कहीं नहीं पाया जा सकता, ये तो मात्र साधु परमेष्ठी के मूलगुण हैं। अब आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूलगुण हुआ करते है, जिन्हें वे पालन करते हैं। उन्हीं संत भगवंतों की श्रृंखला में हमारे पूज्य गुरुदेव उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज हैं। उच्चारणाचार्य का अर्थ होता है जिनका आचरण सभी मुनियों में उच्च हो उन्हें उच्चारणाचार्य कहते हैं अथवा जिनका शब्द उच्चारण सर्वश्रेष्ठ होता है उन्हें उच्चारणाचार्य कहते हैं।

पूज्य गुरुवर में ये दोनों ही विशेषताएँ हैं। उनका आचरण भी उच्च है और शब्दोच्चारण भी श्रेष्ठ है। इसलिए मनीषियों श्रेष्ठियों ने उन्हें उच्चारणाचार्य की उपाधि से विभूषित किया। उच्च शिक्षा प्राप्त कर जहाँ आज का युवा भोगों की और दौड़ता हैं वही हमारे पूज्य गुरुदेव एम.कॉम. डिस्ट्रिक टॉप करने के बाद योग की ओर दौड़ पड़े। हर व्यक्ति कोई न कोई खोज में रहता है मगर हमारे गुरुदेव आत्मानंद (परमानंद) की खोज में जुटे रहते हैं। अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करते हुए निरंतर प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी के काव्यों की रचना किया करते हैं इसीलिए अध्यात्म ग्रंथों पर 5500 छंदों की रचना स्वत: हो जाती है। पूज्य गुरुदेव में अनंतों गुण हैं जिनका व्याख्यान करते–करते अंत नहीं पा सकते वे वात्सल्य के धनी पूज्य गुरुदेव इस धरा को पवित्र कर रहे हैं उनके श्रीचरणों में कोटिश: नमोऽस्तु...

–गुरु चरण चंचरीक
श्रमण मुनि विज्ञसागर

जीवन है पानी की बूँद के 5500 छंद के रचयिता
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

पुण्यार्जक परिवार

श्री धर्मेन्द्र जी–श्रीमती संध्या जैन
सजल–दीपिका जैन, पर्व जैन एवं समस्त कुबेर परिवार
सिमकम्स डिस्ट्रीब्यूटर प्रा. लि., इन्दौर (म.प्र.)

SHYAM
JHANSI

“गुरु जीवन के आधार हैं, अंतस् का प्यार हैं, तत्त्वों का सार हैं, संसार के पार हैं। दिन का प्रारम्भ व अंत गुरु नाम से हो, गुरु जाप से हो, गुरु भक्ति से हो, गुरु ध्यान से हो तो सब कुछ अच्छा अपने आप ही हो जायेगा।”

“The Guru is the foundation of life; the love of the soul; the essence of the elements and beyond the world. If the beginning and the end of the day take place in the name of the Guru; with the chanting of the name of the Guru; with the devotion to the Guru; with meditating the Guru, then everything will be good by itself.”

"प्रशस्त विचार–स्वस्थता की पदचाप हैं। प्रसन्नता–श्रेष्ठ चिंतन का माप है, खुशी–सुखी जीवन की भाप है, भक्ति–मुक्ति की जाप है। खुश रहना ही धर्म की पहचान है मगर खुश रहते हैं वही जिन्हें सच्चा ज्ञान है।"

"Enlightened thoughts are the footsteps of wellness; happiness is a measure of great thinking; happiness is the measure of joyful life; devotion is the chant of liberation; being happy is the symbol of religion; however, only those who have true knowledgere main happy."

"जिस प्रकार एक माँ अपने शिशु को गर्भस्थ रखकर उसे रक्षण देती है, ठीक वैसे ही गुरु भी अपने प्रत्येक शिष्य का ध्यान रखते हैं उसमें संस्कार शिक्षा के बीज बोकर, आचरण के पौधों को लगाकर, अपने प्रेम वात्सल्य से उन्हें सींचकर, रत्नत्रय रूपी गुण पुष्पों को खिलाकर, ज्ञान की महक से शिष्य का सम्पूर्ण जीवन सुरभित कर देते हैं अत: शिष्य की परमार्थ यात्रा में गुरु, माँ की भूमिका निभाते हैं।"

"Just as a mother keeps her baby in the womb and protects her, similarly the Guru also takes care of each of his disciples. They teach them manners by cultivating in them the seeds of culture, by irrigating plant of conduct; by making them learn the three jewels to make their lives bloom; and they fill the lives of their disciples with the perfume of knowledge. In this way, in the spiritual journey of a disciple, the preceptor plays the role of a mother."

“गुस्सा तथा कठोर शब्द हमेशा क्रेडिट कार्ड की तरह होते हैं जिनका उपयोग पहले कर लिया जाता है, तथा उसका भुगतान बाद में ब्याज सहित करना होता है।”

“Anger and harsh words always work like credit cards, which are used first and have to be paid later with interest.”

"जो जितना झुकता है उतना ही उठता है। सदैव फलदार पेड़ और गुणवान् व्यक्ति ही झुकते हैं, सूखा पेड़ और मूर्ख तो सदैव अकड़े ही रहते हैं।"

"The more one leans, the more one rises, fruitful trees and talented persons always bow down, dry trees and foolish persons never bow down."

"गुरुओं के सम्मान में स्वयं का उत्थान, उनके पूजन गुणगान में स्वयं का सम्मान, उनके आज्ञानुपालन में विशेष ज्ञान, उनके शुद्ध स्वरूप में छिपा है कोई भगवान, गुरु को गुरु जैसी नजर ही समझ पाती है।"

"There is upliftment of the self in the honor of the teacher; self-respect is in their worship; and praise, great knowledge in their obedience; a god is hidden in their pure form. A true teacher could be understood only by a true teacher."

"अच्छे सोच पर प्रगति, अच्छे स्वभाव में रुचि, शांत भाव की प्रतीति, क्लान्त भाव का विनाश, गुणियों में लगाव, विपरीतता में तटस्थता जीवन में उत्थान के सूत्र हैं।"

"There progress in good thinking; interest in good nature; realization in calmness; destruction in bad feelings; attachment to virtuous people; neutrality in adversities; these are the formula for upliftment in life."

"जब किसी वस्तु को आँख देखती है, तो मन ललचाता है, हाथ उठाता है, मुँह खाता है, पेट पचाता है और चोरी पकड़ी जाने पर पीठ पर मार पड़ती है तो पुनः आँख ही रोती है अतः रोया वही जिसने देखा था।"

"When the eyes look at an object, the mind becomes tempted, the hand rises, the mouth eats, the stomach digests.If one is caught stealing, one is beaten on the back, then there arethe same eyes again which saw the act, weep;the same eyes which have seen the same object earlier."

"गैरों से प्रेम करने वाला अच्छा है, अपनों से प्रेम करने वाला स्वार्थी है, ईश्वर से प्रेम करने वाला श्रेष्ठ है लेकिन स्वयं से प्रेम करने वाला सर्वश्रेष्ठ है।"

"The one who loves others is good; the one who loves God is very good; however, the one who loves the self is the best."

"हे आत्मन्! सरसों को कोल्हू में क्यों पेला जाता है? क्योंकि उसमें स्नेह, स्निग्धता तेल है ठीक वैसे ही संसार में तुम्हें क्यों रोना पड़ता है? क्योंकि तुम्हारे अन्दर राग, द्वेष, स्नेह व मोह रूपी तेल भरा हुआ है।"

"Why mustard is ground in the crusher? It is because it has greasy; it has oil. Exactly why do you have to cry in the world? Because, inside you are filled with the oil of passion and affection."

"ज्ञान की चादर अज्ञान के साये पर डाल दी जाये तो हमारा जन्म जीवन में बदल जाये अमावस की रात पूनम में बदल जाये तो अन्धेरों में रोशनी खिल जाये। डूबने का सऊर तिरने से उभर आये तो आदमी को समंदर भी न डुबा पाये। ज्ञान एक बहुत बड़ी कला है जिसके साँचे में सारा जीवन ढला है, जो ज्ञान से जला है ज्ञान में ढला है उसी का दुनियाँ में जलजला है।"

"If the sheet of knowledge is put on the shadow of ignorance, then our birth should change into life, the night of Amavas (the darkest night) should change into Poonam (full moon night), then the light should blossom in the dark. When the sense of drowning generates in a man, then the person cannot be immersed into the sea. Knowledge is a great art, in which the whole life is cast in the mold.The one who is ripened with knowledge, is cast in knowledge, is just like a fire in the world."

"स्वभाव के लिए ध्यान, ध्यान के लिए ज्ञान, ज्ञान के लिए श्रद्धा, श्रद्धा के लिए श्रद्धान और श्रद्धान के लिए कर्त्तव्य की आवश्यकता है अतः कर्त्तव्यहीन को दुःख रूप कर्म व कर्त्तव्यशील को सुखरूप स्वभाव प्राप्त होता है।"

"Meditation is required for conduct; knowledge is for meditation; reverence is for knowledge; devotion is for reverence; obligation is required for devotion. Therefore, the duty lessperson getskarma in form of grief and the dutiful person gets only happiness."

"भगवान् महावीर कहते हैं यदि आप बहुत अधिक लोगों पर निर्भर रहते हैं तो आपके निराश होने के अवसर भी अधिक हो जाते हैं इसलिए स्वयं पर निर्भर होना ज्यादा अच्छा है, दूसरों पर निर्भर रहने की अपेक्षा।"

"Lord Mahaveer says, "If you depend on a lot of people, then your chances of getting frustrated will also increase. Therefore, depending on the self is better than depending on others."

"सुनना सोचने में, सोचना समझने में, समझना निर्णय में, निर्णय सम्यग्दर्शन में, सम्यग्दर्शन चारित्र में, चारित्र चिंतन में, चिंतन ध्यान में, ध्यान ज्ञान में और ज्ञान मोक्ष में सहायक है। अत: वही सुनें जो श्रेय प्रदायक हो।"

"Hearing is helpful in thinking; thinking in understanding; understanding in decision making; decision making in attaining right faith; right faith in good conduct;good conduct in meditation; meditation in concentration; concentration in knowledge and knowledge is helpful in attaining salvation. Therefore, listen only what brings in better results."

"यह मनुष्य तो घुन लगे गन्ने के समान निष्फल है। यह आपदा रूपी गाँठों से तन्मय है और अंत में नीरस है। इसका मूल चूसने योग्य नहीं है और मध्य क्षुधा, कोढ़ादि भयानक रोग छिद्रों से सहित है, इसलिए मध्य भी भोगने योग्य नहीं है। यह नाम मात्र के लिए रमणीक है। अत: ऐसी निस्सार मनुष्य पर्याय को धर्म बीज बनाकर सफल करना ही योग्य है।"

"Human life is as fruitless as a mite ridden sugarcane because it is associated with disastrous knots and finally it becomes monotonous. The root of which is not able to be sucked, and the middle is dry which is full of terrible holes containing leprosy and many other diseases. So, its middle is also not useful. It is delightful merely for name. It is worthy to make such a destitute human life successful by planting religious seeds in it."

"जिस प्रकार साबुन में वस्त्र के मैल को दूर करने की शक्ति होती है, उसी प्रकार पश्चाताप के आँसुओं में पाप मल को धोने की अपूर्व शक्ति होती है क्योंकि अपनी गलती की आलोचना करने पर सजा कम मिलती है अत: आत्म निंदा व गर्हा दु:खों को गिरने के लिए बुल्डोजर है।"

"As soap has the power to remove filth from clothes, in the same manner two drops of tears of repentance have the rare power to wash away filth of sins because criticizing the mistakes committed by the self invites less punishment. Therefore, self-accusation is like a bulldozer to pull down the woes."

"जो कह दिया वह शब्द हैं, जो नहीं कह सके वो अनुभूतियाँ हैं, और जो कहना है मगर कह नहीं सकते वो मर्यादा है। अतः मर्यादा वह नींव है, जो रिश्तों के महल को थामकर रखती है।"

"That which have been spoken are words; that which could not have been spoken are feelings; and those which we want to say but cannot, are our limitations. These limitations are the foundation that hold the palace of relationships."

“भो मतिमान्! झुक के जीना सीखो ताकि दूसरों के आशीर्वाद भरे हाथ सहजता से आपके सिर तक पहुँच सकें। क्योंकि जो बाल्टी कुएँ में झुककर जाती है, वो सदैव भरकर आती है, ये ही जीवन का गणित है, जो झुकता है वह प्राप्त करता है।”

“Hey wise man! Learn to live by leaning so that the blessed hands of others can easily reach your head to shower their blessings, because the bucket that goes into a well tilted, it comes duly filled. The same is the mathematics of life, the one who bends gets everything.”

"सब लोग हमारी पसंद नहीं, हम सब लोगों की पसंद बनें। दूसरों को मीठा नहीं हम ही कलाकंद बनें। नये संस्कारों के साथ नई विचारधारा हो जिसमें, अपना ही अपने लिए सहारा हो और मंजिल पाने के लिए नजरों के सामने किनारा हो।"

"Not all people are our like, let us be the choice of all people. We cannot make other sweet, let us ourselves become sweet like kalakand. One must be a support for one's own people and there must be a front edge to get the destination."

"भगवान् महावीर कहते हैं – जो सत्य है वह मेरा है प्रकृति की प्रत्येक रचना सत्य है। अतः उन्होंने प्रकृति की प्रत्येक कृति को अपनाया था। आज मानव की स्थिति ऐसी है कि वह कहता है जो मेरा है वह सत्य है इसी भूल के कारण वह अपने अस्तित्व को प्राप्त नहीं कर पाता और मेरापने में अपनी मान कषाय को पुष्ट करता रहता है। यदि हम भगवान महावीर के वंशज हैं तो माइट इज राइट नहीं राइट इज माइट के सिद्धांत को जीवन में चरितार्थ करना होगा।"

"Lord Mahaveer says, "What is true is mine. The entire creation of the nature is true". That is why he adopted every work of nature. Today the human condition is such that what he himself owns only that is true. Only due to this mistake, he does not attain his own existence and owing to his discriminative feeling of ownness and otherness, he only makes his egoistic passion stronger. If we are real descendants of Lord Mahaveer, not the theory of might is right, but the theory of right is might should be propagated."

"शरीर मोबाइल है तो मन है मैमोरी कार्ड। कार्ड में डाटा पड़ा है एक-एक को डिलीट कर दें तो मैमोरी कार्ड होते हुए भी वह बेकार है ठीक वैसे ही मन में बहुत से विकल्प हैं, एक-एक करके सबका त्याग हो जाए तो आत्म ध्यान होने में वक्त नहीं लगेगा क्योंकि जो हमारे मोबाइल में होता है वही स्क्रीन पर आता है और जो हमारे मन में होता है वही ध्यान में आता है।"

"The body is like a mobile; the mind is like a memory card; the card contains the data. Delete it one by one, the memory card becomes useless. In the same manner, the mind has so many options, if all are given up, it will take no time to attain self-realization. Because, whatever data is in mobile, only that will appear on the screen. Likewise, whatever is in our mind, it appears in our thoughts."

"हमारा व्यवहार इतना मधुर हो कि सभी हम पर जान छिड़कें, ऐसा न हो कि सब हमसे जान बचायें। ताकत की भाषा में रोष व अभिमान हुआ करता है वहीं दूसरी ओर प्रेम की भाषा में अपनत्व की जान होती है। प्रेम सब कुछ दिला सकता है अतः प्रेम का अमृत अपने जीवन में घोलो तत्पश्चात् अपने वचनों को बोलो।"

"Our behaviour should be so sweet that everyone loves us, lest all other escape their lives from us. The language of power is pride and aggression, on the other hand the language of love is the soul of belongingness. Love can make you to get everything, therefore, the life should be filled with the nectar of love and then express yourselves."

"हर पीर को सहने की हिम्मत करके खुद पर जब हम दृढ़ विश्वास करते हैं तब हम खुद ही अपने जीवन में संयम का विकास करते हैं। दृढ़ विश्वास ही हमारी राह पर सफलता का कदम दृढ़ विश्वास है तो दमखम है, वरना दम कम है।"

"When by daring to endure every pain, we become self-confident, we start developing self - restraint in our lives. Conviction is a step to success on our path. Strong belief makes us powerful, otherwise there is only lowliness."

“धर्म के रंग के उमंग साथ हो, सही ढंग हाथ हो तो हर दिन नया सबेरा लगता है, गुरुओं का साथ हो उनके आशीष का हाथ हो तो हर जगह बसेरा लगता है। जीवन में उमंग के साथ अनुभव व संयम का रंग हो, स्व का स्व में रमण करने का शुभारम्भ हो तब ही धर्म का रंग हमारे जीवन में दिखाई देता है।”

“If you have a right hand with zeal in the color of religion, hen it seems that every day to be dawn. If the gurus are with their blessing then thay live every where. The color of religion is visible in our life only when the joy of experencing and restraining in life.”

अद्भुत

"भो मतिमान्! धन (दान) गुणवानों को दें अन्य को नहीं क्योंकि समुद्र का खारा जल भी मेघों के मुँह में जाकर सदैव मीठा हो जाता है और पृथ्वी के चराचर जीवों को जीवनदान देकर पुनः कई गुना होकर फिर से समुद्र में ही चला जाता है। अतः गुणवानों को दिया गया धन सदैव गुणित होकर प्राप्त होता है।"

"Hey wise person! Donate money to the virtuous and not to others, because the saline water of the sea passing through the mouth of the clouds always becomes sweet, and after giving life to the innumerable movable creatures of the earth, getting manifold gets into the sea again. Therefore, the money donated to the virtuous is obtained back multifold."

"यह हमारी खुशकिस्मती है कि हम भगवान को मानते हैं परन्तु बदकिस्मती यह है कि उनकी मानते नहीं हैं। काम का आलस और पैसों का लालच हमें महान नहीं बनने देता, अपना धर्म ऊँचा और दूसरों का ओछा ये सोच हमें इंसान नहीं बनने देती।"

"We are fortunate that we believe in God but it is unfortunate that we do not believe in what he preached. The laziness in work and greed for money do not allow us to become great. The thinking that our religion is great and the religion of the other is low does not allow us to become human beings."

“भो मतिमान्! लोहे के संयोग से अग्नि को भी पिटना पड़ता है। अहो! इस जगत में जड़ शरीर के संयोग से इस भगवती चेतन आत्मा को भी पिटना पड़ता है। अत: उपयोग को शरीर (जड़) से ममत्व हटाकर चेतन की ओर लगाना चाहिए।”

“With the combination of iron (power of the cold iron), fire toois beaten. Oh! The conscious soul has to be beaten co-incidentally by the presence of this physical body.”

“संत एक वृक्ष की तरह होते हैं, संयम उसकी जड़ है, शास्त्र उसकी शाखाएं हैं, धर्म और कर्म उसकी पत्तियाँ हैं और ज्ञान फल है। संत का कर्तव्य है कि वह जड़ की रक्षा करे क्योंकि बिना जड़ों के कोई शाखा, पत्तियां और फल नहीं होते।”

“The saint is like a tree; sobriety is its root; scriptures are its branches; religion and karmas are its leaves; knowledge is its fruit. Therefore, it is the duty of a saint to protect its roots because without roots there will be no branches, no leaves and no fruits.”

“भो मतिमान्! लकड़ी, पत्थर और धातु–सोना आदि की बनी मूर्ति को साक्षात् भगवान समझकर जो मनुष्य जिस भाव से मूर्ति की पूजा करता है, उसे उसी प्रकार से सिद्धि प्राप्त होती है। क्योंकि भगवान न तो लकड़ी में है, न ही पत्थर में और न ही माणिक से बनी प्रतिमा में, निश्चय से वह मात्र आपके भाव में विद्यमान है अतः आपका भाव ही सबका कारण है और आपकी भक्ति ही मूर्ति में परमेश्वर को स्थापित कर देती है।”

“By considering the idol made of wood, stone, and metal as the true God, the person who worships that idol, gets the same kind of accomplishment. Because the God is neither in the wood, nor in the stone, metal or gems. The God is there in the feelings. Therefore, it is your feeling which is the cause of your accomplishment. It is your devotion that makes an idol as your God.”

"भो मतिमान्! दृष्टि से देखकर पैर रखना चाहिए, कपड़े से शुद्ध करके अर्थात् छानकर पानी पीना चाहिए, शास्त्र से शुद्ध करके वचन बोलना चाहिए, अग्नि से शुद्ध करके भोजन करना चाहिए और मन से विचारों को शुद्ध करके कार्य करना चाहिए।"

"Hey wise man! Set your feet aheadlooking down,drink water after being purified with cloth, that is, filtered through it. Words should be spoken duly purified according to the scriptures; food should be taken after being purified with fire (completely cooked); and work should be done with due consideration in mind."

"संस्कृत : ह्रस्व, दीर्घ, विसर्ग और अनुस्वार का उचित प्रयोग है।

ह्रस्व : हमें सिखाता है छोटों से कैसा व्यवहार करना चाहिए।

दीर्घ : हमें सिखाता है बड़ों का कैसे सम्मान करना चाहिए।

विसर्ग : हमें सिखाता है समकक्ष के साथ प्रेम व्यवहार करना चाहिए।

अनुस्वार : हमें सिखाता है (अहं) अहंकारियों से कब ? कहाँ और कैसा ? व्यवहार करना चाहिए। यही संस्कृत है, इसको जानना संस्कृति व इसका उचित प्रयोग हमें संस्कारवान् बनाता है।"

"Sanskrit- is the proper use of hrasva (short), dirgha (long), visarg (colon like sign) and anusvara.

Hrasva- teaches us how to treat smaller ones,

Dirgha- teaches us how to respect elder ones,

Visarga- teaches us how to treat the same class people lovingly,

Anusvara- teaches us how/where/when to behave with egoists.

This is Sanskrit. Knowing it is culture and using it appropriately makes us genteel."

"भो मतिमान्! अपने से बड़ों से द्वेष करने से जीवन का नाश होता है, शत्रु से द्वेष करने से धन का नाश होता है, मित्र से द्वेष करने से मानवता का नाश होता है, राजा से द्वेष करने से अपना सर्वनाश होता है किन्तु गुरु से द्वेष करने पर सम्पूर्ण कुल (ज्ञान) का ही नाश हो जाता है।"

"Hey wise man! Life is destroyed by grudgingour elders; wealth is destroyed by grudging our enemies; the self is completely destroyed by grudging the king; however, the complete family is destroyed by grudging the teacher (preceptor)."

"भो मतिमान्! संयम ही अच्छे जीवन का शृंगार है, संयम ही गुरु का परम उपकार है, संयम ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है। जिसके पास न संयम है, न तप है, न दान है और न धर्म है वह इस पृथ्वी पर भार स्वरूप है। अतः अपने जीवन को संयमरूपी गुण पुष्पों से शृंगारित करें।"

"Hey wise man! Abstinence is an adornment of good life. Abstinence is the supreme gift by the preceptor. Abstinence is the basis of superior life. Therefore, the one who has none of abstinence, knowledge, penance, charity and religion, is a kind of burden on this earth. Therefore, adorn your life with the flowers of abstinence."

"चोरी किया गया धन मिल सकता है, कठिन से कठिन रोग का भी इलाज हो सकता है परन्तु यदि आत्म विश्वास खो गया तो वह नहीं मिल सकता। आत्मविश्वास सफलता की एक सबसे बड़ी शक्ति है। अत: धूर्त लोगों से बचिए। अपने काम में बराबर लगे रहिए। क्योंकि आत्मविश्वास ही मनुष्य को सफलता तक ले जाता है।"

"Stolen money can be regained; even the most inveterate disease can be cured; However, when the self-confidence is lost, it cannot be regained. Self-confidence is the greatest power to achieve success. Therefore, stay away from the crafty people. Be persistently engaged in your work, because self-confidence leads one to success."

"हर राह पर काँटे बहुत हैं, फूल कम हैं, आँखें रोती बहुत हैं, हँसती कम हैं, ऐसा लगता है खुशियाँ कम हैं, ज्यादा गम हैं। हम यही चाहते हैं आपके दामन में खुशियाँ ही खुशियाँ हों लेकिन उससे पहले हर गम को हँसी बनाना, गर गम हँसी बन जायेगा तो सच मानो भीतर का चिराग स्वयं जल जायेगा और सम्पूर्ण जीवन प्रकाशमान बन जायेगा।"

"There are more thorns on each path, fewer flowers. Eyes shed more tears than laughing. It seems as if happiness is less than the pains or sufferings. We wish only happiness be with you. But, before that try to convert all pains into happiness. Take it as a truth if all the pains are converted into happiness, the lamp of the inner soul will automatically be lit and the whole of the life will become enlightened."

"भो मतिमान्! जीव बिना जंजाल के पैदा होता है, वह स्वयं ही जाल बुनता है और फिर उसी जाल में फँस जाता है। मकड़ी भी जाल बुनती है वह जाल बनाने के लिए तार कहीं फैक्ट्री से नहीं लाती अपितु अपने मुख से ही निकालकर जाल बुनती है और उसी जाल में फँसकर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है ठीक वैसे ही मानव भी जाल बनाता है और यदि वह जाल से न निकले तो खुद ही उसमें फँस जाता है। अत: जाल से निकलना ही श्रेयस्कर है क्योंकि एक हवा के झोंके से मकड़ी का जाल और एक भूकम्प के झटके से मानव का जंजाल तहस नहस हो जाता है।"

"A person comes to this earth carrying no troubles. He himself invites his own troubles and then gets entangled in them. A spider does not bring the thread from any factory to knit the web, it knits it by making the thread by its own mouth. It entangles itself in its own knit web and dies. In the same manner, a human being also knits his own web and if he does not get out of it, he gets entangled in it. Therefore, It is better to move out from that web because as only a thrust of wind is enough to destroy the spider's web, in the same manner a thrust of an earthquake is enough to destroy the web knit by the man."

"जिसे भोगों में आनन्द न आये, वह भोगी ही कैसा और जिसे योगों (योगीपने) में आनन्द न आये, वह योगी ही कैसा। अत: जिसकी जैसी परिणति होती है, उसे उसी रूप कार्यों में आनन्द आता है।"

"The one who deos not enjoy the pleasure, how is the enjoyer? and how does not enjoy the sainthood, how is the saint. Therefore as the result of which,one enjoys working in the some."

"सबको जानना अच्छा है किन्तु स्वयं को जानना सबसे अच्छा है, सभी भाषाएँ श्रेष्ठ हैं लेकिन मौन सर्वश्रेष्ठ है, सब के बारे में सोचना उत्तम है परन्तु निर्विकल्प अवस्था सर्वोत्तम है, सर्व समितियाँ उत्कृष्ट हैं परन्तु ध्यान सर्वोत्कृष्ट है। अत: सर्वोच्च, सर्वोत्कृष्ट और सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति का लक्ष्य ही श्रेष्ठ है।"

"It is good to know everything, but it is the best to know the self. All languages are good, but silence is the best. Everything is good to think about, but non-thinking is the best. All the areas of caution are good, but the meditation is the best. Therefore, the aim of a human being should be to become or get the best, supreme and excellent."

"भो मतिमान्! मन से बाहर फैले आत्मा से सीमित रहे संयम, बाहर की वस्तुओं में सीमा न बनाए असंयम, वस्तुओं से सीमित हो देश संयम, इन्द्रिय व मन को सीमित करे सकल संयम, मन की निर्मलता प्राप्त हो परिहार विशुद्धि संयम, आशा की गंदगी निकली सूक्ष्म साम्पराय संयम और अंत में आत्मस्वरूप की उपलब्धि होना यथाख्यात संयम है। अत: सीमित होकर असीमितता की ओर प्रयाण होना चाहिए।"

"Hey wise man! hat which remains confined to the soul though spread outsidethrough mind is called self-restraint; that which does not limit the external things is called non-restraint; that which is confined only to limited things is called partial restraint; that which has control over senses and mind is called total restraint; the purity of the mind is called purificatory course restraint; removal of the filth of the soul is called subtle positioned restraint; and at last attainment of the nature of the self is called revelation of absolute conduct. So, one should try to expand being within limits."

"भो मतिमान्! जिस व्यक्ति को किसी के उपकार पर बहुत बहुमान होता है उसका दुनियाँ में बहुत सम्मान होता है उपकार ही जीवन का आधार होता है, इसके बिना कहाँ किसका उद्धार होता है। अर्थात् उद्धार के पिपासुओं को उपकार विस्मृत नहीं होना चाहिए।"

"Hey wise man! here is a lot of respect for someone's benevolence, he is respected a lot in the world. Benevolence is the basis of life, without which there is no possibility of attaining salvation. In other words, those who are desirous of salvation should not be forgetful of one's benevolence."

"भक्ति वह सेतु है जो परमात्मा से मिला दे, वह संगीत है जो हृदय को झंकृत कर दे, वह खुश्बू है जो आत्मा को महका दे, वह चमन है जिसमें प्रभु भक्ति की बहार है, वह दिनकर है जिसमें कैवल्य रश्मियाँ स्फुरायमान होती हैं, वह रस है जिसके बिना सारे रस बेरस हैं और वह पवित्र गंगा है जिसमें नहाकर भक्त का हृदय आनंदित हो उठता है।"

"Devotion is the bridge that blends with the divine; the music that makes the heart tinkle; the fragrance that smells the soul; the fragrant gardenwhere the devotion to Lord springs; the Sun which scatters the rays of omniscience; the flavor without which all the juices are flavorless; and it is the holy Ganges in which the heart of a devotee rejoices by taking a dip. Hence devotion is the best."

"हे साधको! प्रसन्नता हमारा प्रतिदिन का स्वभाव हो, सभी को प्रसन्न रखने का हमारा भाव हो, अच्छाइयों से हरदम हमारा लगाव हो, ऊँचाइयों को पाने का हमारा चाव हो। साध्य को साधते-साधते हम साधना में उतर जायें और जब कोई हमें देखे तो हम साध्य या साधना ही नजर आयें। तब ही हम नर से नारायण की यात्रा पूर्ण कर पायें।"

"O seekers! Happiness should be our routine nature. Our effort should be to make all happy. Our attachment should always be with the goodness. Our aim should be to attain heights. While trying to attain our goals, we should immerse deep into spiritual practice. We should always be seen practicing spiritualism, when someone sees us. Only then we could be able to complete our journey from man to god."

"भो मतिमान्! बाधाओं को काटकर, कर्मों को छाँटकर, हिम्मत को बाँधकर, गुरु आराधना और आशीष के साथ जो अपने कदम बढ़ाता है, वह व्यक्ति एक दिन सफलता के सारे आयाम छू जाता है।"

"The man who makes his moves by removing barriers, sorting out deeds, gathering courage, and with the devotion to and the blessings of the preceptor, that person touches all the bounds of success one day."

"भो मतिमान्! सही ज्ञान ही काँटों में फूल, प्रतिकूल में अनुकूल, दु:ख में सुख, भोग में योग, अभाव में स्वभाव और सद्भाव में अभाव का दर्शन करा देता है। यही ज्ञान इंसान को महान बनाकर भगवान् बना देता है। अत: प्रतिपल सत्यज्ञान को जीवन में चरितार्थ करना चाहिए।"

"Hey wise man! Only the right knowledge makes one feel thorns as flowers, adverse as favourable, sadness as happiness, enjoyment as yoga and luck in harmony. This knowledge makes a man great and leads him to the status of God. Therefore, one should follow true knowledge all the time."

"गुरु ही साधना के शिखर पर सिद्धत्व की सृष्टि हैं, आत्मा की भूमि पर अध्यात्म की दृष्टि हैं, जिन्दगी के जिनालय में प्राणों की प्रतिमा हैं, समाज के शीश पर सौभाग्य का सिंदूर हैं व कृति के बाजार में संस्कृति का चिराग हैं अतः गुरु ही अन्धेरी रात में पूर्णिमा का चाँद हैं।"

"The preceptor is the world of creation at the peak of spiritual practice; he is a vision of spirituality on the land of the soul; he is a statue of soul in the temple of life; he is a vermilion of fortune at the head of society; and a lamp of culture in the market of creation. Therefore, only the preceptor is like the full moon (Moon of Poonam) in darkness of the night."

"गुरु का वात्सल्य स्फूर्तिदायक है इसके अभाव में सामान्य साधना भी पर्वत तुल्य प्रतीत होती है और इसके प्रभाव से काँटों पर चलना भी फूलों पर चलने सदृश अनुभूत होता है। अत: गुरु शिष्य का संबंध आस्था और प्रेम का पवित्र संबंध है और यह बंधन ही अनन्त बंधन का अंत कराता है।"

"The preceptor's love is energizing. In the absence of it normal practice of penance looks like a mountain and due to its effect, walking on thorns feels like walking on flowers. Therefore, the relation between the preceptor and the disciple is a sacred one which is a bond of faith and love and this bond leads to last of the infinite bond."

"हे साधको! दीक्षा मंगल–आचरण का मंगलाचरण है, यह भेष परिवर्तन मात्र नहीं अपितु हृदय परिवर्तन है। सत्य, निष्ठा, वैराग्य, सहिष्णुता, प्रव्रज्या योग एवं किसी पर भार न होना ये पाँच गुण शिष्य की दीक्षा को सार्थक एवं गुरु के कार्य को सुगम करते हैं अत: दीक्षा का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति है प्रदर्शन नहीं।"

"O seekers! Initiation is the invocation of auspicious behaviour. Initiation is not merely a change in garb, rather it is a change of heart. Truth, loyalty, detachment, tolerance, pravajya activity and not to be a burden on any one, these five virtues make the work of the preceptor easy and of worth. Therefore, the main object of initiation is spiritual progress and not a show-off."

"**क्ष** + मा = क्षमा, इस शब्द में माँ शब्द छिपा है और माँ में ममता, ममता में दया और प्रत्येक जीव पर दया करना ही क्षमा है क्योंकि जो ताला चाबी को एक तरफ घुमाने से बंद हो जाता है वही उसे दूसरी तरफ घुमाने से खुल भी जाता है। अतः यदि तुमने किसी का दिल दुखाकर ताला लगा दिया है तो वह पुनः क्षमा रूपी चाबी से खोला जा सकता है। अतः क्षमा वह मास्टर की है, जो संसार क्या मोक्ष महल के ताले को भी खोल सकती है।"

"In the word Kshama (forgiveness), maa = mother is hidden and this word contains the feeling of love, and kindness, so, kindness and love to all living being is forgiveness, because the same lock is locked by turning the key on one side, and it is opened on turning the key to the other side. Therefore, by causing pain if you have locked some one's heart, then with the key of forgiveness you can again unlock it. Therefore, forgiveness is a master key which can unlock not the world only but the locks of salvation also."

"जीवन के प्रत्येक मोड़ पर माँ का बहुत महत्त्व है। जन्म के उपरांत संस्कार देकर माँ बालक पर उपकार करती है, जब वह बालक वयस्क हो जाता है तब अच्छे-बुरे मित्रों की संगति में पड़कर कुसंस्कार जब उस पर हावी होने लगते हैं तब उसे बचाने उसकी दूसरी माँ यानी महात्मा आते हैं फिर वे महात्मा उसे अन्धकार की संकीर्ण परिधि से निकालकर ज्ञान के आकाश में ले जाते हैं तब उसका साक्षात्कार होता है तीसरी माँ यानी परमात्मा से और ये तीनों माँ मिलकर उसका जीवन धन्य कर देती हैं।"

"The mother is very important at every turn of life. After giving birth, she trains the child by teaching him manners. However, when this child grows into an adult, often he falls victim of ill-manners in the company of his good and bad friends, and he starts avoiding her. At such a crucial time, his second mother or ascetics appear to play their role to save him and take him away from the periphery of darkness to the sky of knowledge where he comes face to face with his third mother- God and these three together make his life blessed."

"सच्चा ज्ञान ही अन्धे को आँखें, लंगड़े को पैर, पंगु को हाथ तथा अनाथों को साथ दिलाता है। इसका जीवन से अविनाभाव जैसा संबंध है।"

"The true knowledge eyes the blinds, gives legs to the lames, gives hands to the armless, and brings companions to the orphans. It has intimate relationship with life."

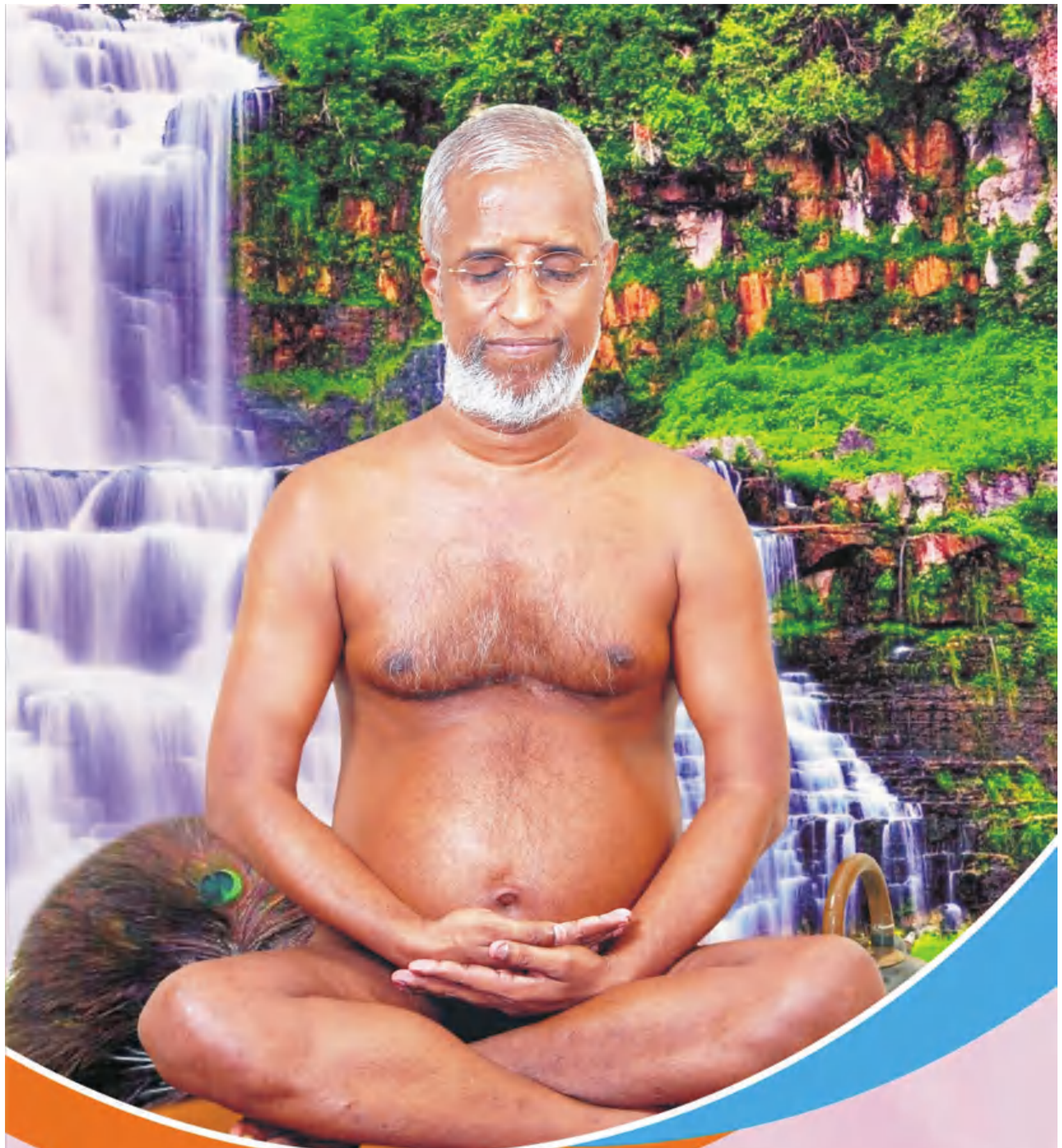

पानी को ऊँचा उठाने के लिए यंत्र की
और जीवन को ऊँचा उठाने के लिए
संत की आवश्यकता होती है।

प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज